

# ‘मातृ-पितृ पूजन’ दिवस कार्यक्रम मार्गदर्शिका

“ १४ फरवरी ‘मातृ-पितृ पूजन दिवस’ से बहुत-बहुत



सूखे हृदय रसमय हुए हैं, उजड़ी  
उमंगें फिर पल्लवित हुई हैं। काँटे  
फूल में बदल गये, वैर प्रीत में  
बदल गये। हार जीत में बदल  
गयी और महाराज ! मौत मोक्ष  
में बदल जाती है माता-पिता और  
गुरुओं के संग और आशीर्वाद  
से ।”

- पूज्य बापूजी

## कोरोना में कैसे मनायें मातृ-पितृ पूजन दिवस ?

१. १४ फरवरी को सभी लोग अपने घर पर माता-पिता का पूजन करें।
२. जैसा कि हम सभी जानते हैं कोरोना महामारी के चलते लगभग सभी स्कूल/कॉलेज/यूनिवर्सिटीज/सरकारी एवं प्राइवेट शिक्षण संस्थायें बंद हैं।
३. इसलिए मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रम का आयोजन विभिन्न सोसायटी, पार्क, मंदिरों जैसे स्थानों पर (प्रशासन की अनुमति ले आवश्यक लगे तो) किये जा सकते हैं।
४. कार्यक्रम के दौरान मास्क, सोशल डिस्टसिंग, सैनिटाइजर का विशेष ध्यान रखें।
५. कार्यक्रम के लिए लगनेवाली सामग्री की पहले से व्यवस्था करके रखें।
६. कार्यक्रम के दौरान साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखें।

यह मातृ-पितृ पूजन के लिए सहायक मैटर है,  
समयानुसार आपको जो अनुकूल लगे वही प्रसंग लें ।

## भूमिका

राम-राम ! जय श्रीकृष्ण !! कैसे हैं आप सब ? आनंद  
में, मौज में ! आनंद और मौज में थोड़ी दिक्कत आ गई  
कोरोना की वजह से । मगर फिर भी आपने दीपावली तो  
मनाई, हाँ । दशहरा भी मनाया, हाँ । तुलसी पूजन दिवस भी  
मनाया, हाँ ! अपने घर पर ही, अपने परिवार के साथ ही  
आपने पर्व-त्यौहार मनायें । जैसे दीपावली दशहरा घर-घर  
में सभी मना लिया, ऐसे ही ये मातृ-पितृ पूजन दिवस भी इस  
बार अपने घर में, अपनी सोसायटी में, अपने पास-पड़ोस में  
एक पर्व की तरह जखर मनायें और आज हम यहाँ भी मना  
रहे हैं ।

‘परस्परं भावयन्तु ।’ हम एक दूसरे को उन्नत करें ।  
‘तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।’ मेरा मन सदैव शुभ विचार  
ही किया करें । - इस प्रकार की दिव्य भावना को जगानेवाले  
हमारे रक्षाबंधन, भाईदूज जैसे पर्व ! और पश्चिम के देशों के

प्रेम के नाम पर पतन को आमंत्रित करनेवाले वेलेंटाइन-डे, रोज-डे, फ्रेंडशिप-डे जैसे तथाकथित त्यौहार जिनका हम हिंदुस्तानी, हम भारतवासी बिना कुछ जाने-समझे अंधानुकरण करने लगे हैं।

## क्यों मनाते हैं हम वेलेंटाइन-डे ?

आज हर वर्ग भारतीय संस्कृति को भूलकर पश्चिमी संस्कृति को अपनाता जा रहा है, विदेशों की चकाचौंध से भरी सभ्यता को देखकर हमें लगता है कि वहाँ की हर चीज, हर बात अच्छी एवं अनुकरणीय है। हम बिना यह सोचे कि वह चीज हमारे लिए उपयोगी है या नहीं, उसे अपनाने के लिए लालायित रहते हैं। वास्तव में हमें WEST का BEST लेना चाहिए न कि WEST का WASTE.

हम क्यों मनाते हैं वेलेंटाइन-डे ? न तो यह हमारी संस्कृति में है और न ही हमारे देश में कभी इस दिवस का प्रचलन था। फिर भी धीरे-धीरे यह विदेशी अश्लीलता हमारे देश के युवानों के मनों में घर बनाकर उन्हें खोखला करती जा रही है। देश की भावी पीढ़ी की इस दुर्दशा को देखकर पूज्य बापूजी ने १४

फरवरी को वेलेंटाइन-डे मनाने के बदले 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाने का आवाहन किया है।

पश्चिम की चमक-दमक से प्रभावित हुए हम भारतवासी 'मातृदेवो भव । पितृदेवो भव ।' जैसे उच्च नैतिक मूल्यों से भरी अपनी संस्कृति की गरिमा को पहचानें, इसलिए पिछले ३५ वर्षों से पूरे विश्व में ३४ फरवरी को मातृ-पितृ पूजन दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। इसलिए आज हम माता-पिता के प्रति अपने उस सच्चे प्रेम को व्यक्त करने के लिए हम सब यहाँ एकत्रित हुए हैं।

सबसे प्यारा, सबसे सुंदरतम् शब्द संसार में है - 'माँ' ! इसमें इतनी मिठास भरी हुई है ! माँ का पूरा स्नेह, पूरा प्यार ! माँ या पिता, यानि दोनों का प्यार। माँ और पिता का जो दर्जा है वो सचमुच देवताओं से भी कहीं बढ़कर है। हमने परमात्मा को नहीं देखा, हमने भगवान को नहीं देखा, लेकिन हमने अपने माता-पिता को साकार देखा है। हमारे माता-पिता इस संसार में हमारे लिए भगवान का ही रूप हैं। परमात्मा इस सृष्टि का पालन-पोषण करता है, यह हम जानते हैं लेकिन यह काम वो किस जरिये से करता है, किस

तरीके से करता है, क्या हम जानते हैं ? ईश्वर सृष्टि के पालन-पोषण का कार्य माता-पिता के रूप में करते हैं ।

माता-पिता हमारे जीवन के सबसे पहले शिक्षक होते हैं । हम उनसे बहुत कुछ सीखते हैं । माता-पिता अपनी जखरतों को पीछे रखकर हमारे लिए सब कुछ करते हैं । वे हर परिस्थिति में हमारा साथ देते हैं और हमें सही रास्ता दिखाते हैं । हमें अपने माता-पिता के द्वारा दिये गये संस्कारों का अनुकरण करना चाहिए । उनका आदर-सम्मान करना चाहिए । उनकी सेवा-सुश्रुषा करके अपना जीवन धन्य बनाना चाहिए ।

जो लोग अपने माता-पिता की सेवा नहीं करते हैं, उनका जीवन व्यर्थ है । जिस प्रकार गुरु और भगवान का आशीष फलता है उसी प्रकार माता-पिता का आशीर्वाद भी फलता है ।

‘मातृदेवो भव । पितृदेवो भव ।’ अर्थात् ‘माता-पिता ईश्वर के समान हैं ।’ यह हमारी महान् हिंदू संस्कृति की शिक्षा है ।

प्राचीनकाल में लोग लम्बी उम्र तक कैसे जीते थे, क्या आप जानते हैं ? क्योंकि उस समय लोग अपने माता-पिता

को प्रतिदिन प्रणाम करके उनका आशीर्वाद प्राप्त करते थे ।

\* जीवन में माता-पिता के महत्व की पौराणिकता दर्शाने के लिए निम्न शास्त्रों के वचन और महापुरुषों के उद्गार भी कार्यक्रम के दौरान बताये जा सकते हैं -

\* माता गुरुतरा भूमेः खात् पितोच्चतरस्तथा ।

‘माता का गौरव पृथ्वी से भी अधिक है और पिता आकाश से भी ऊँचे (श्रेष्ठ) हैं ।’

(महाभारत, वनपर्वणि, आरण्य पर्व : ३१३.६०)

\* ‘माता-पिता एवं गुरु की सेवा करना, सर्वोत्तम तपस्या है ।’ - ऐसा धर्मशास्त्र में कहा गया है ।

\* शिवपुराण में आता है :

पित्रोश्च पूजनं कृत्वा प्रक्रान्तिं च करोति यः ।

तस्य वै पृथिवीजन्यफलं भवति निश्चितम् ॥

‘जो पुत्र माता-पिता की पूजा करके उनकी प्रदक्षिणा करता है, उसे पृथ्वी-परिक्रमाजनित फल अवश्य सुलभ हो जाता है ।’

\* मातापित्रोस्तु यः पादौ नित्यं प्रक्षालयेत् सुतः ।

तस्य भागीरथीस्नानं अहन्यहनि जायते ॥

‘जो पुत्र प्रतिदिन माता-पिता के चरण परखारता है,  
उसका नित्यप्रति गंगा-स्नान हो जाता है।’

(पद्म पुराण, भूमि खंड : ६२.७४)

\* इसके साथ ही महाभारत महाकाव्य के रचयिता  
महर्षि वेदव्यास ने ‘माँ’ के बारे में लिखा है कि

नास्ति मातृसमा छाया, नास्ति मातृसमा गतिः ।

नास्ति मातृसमं त्राण, नास्ति मातृसमा प्रिया ॥

अर्थात् ‘माता के समान कोई छाया नहीं है, माता के  
समान कोई सहारा नहीं है। माता के समान कोई रक्षक नहीं  
है और माता के समान कोई प्रिय चीज नहीं है।’

\* सामवेद में एक प्रेरणादायक मंत्र मिलता है, जिसका  
अभिप्राय है, ‘हे जिज्ञासु पुत्र ! तू माता की आज्ञा का पालन  
कर, अपने दुराचरण से माता को कष्ट मत दे। अपनी माता  
को अपने समीप रख, मन को शुद्ध कर और आचरण की  
ज्योति को प्रकाशित कर।’

\* शास्त्रों का तो कथन है कि ‘संसार में बसने वाली  
आत्मा यदि क्षुद्र स्वार्थ के वशीभूत होकर अपने माता-पिता  
की अवज्ञा करे तो उसके समान कोई दुष्ट नहीं है।’

\* श्री रामचरितमानस में एक सारगर्भित व प्रभावकारी चौपाई आती है-

मात-पिता गुरु प्रभ के बानी ।  
बिनहि विचार कहिये शुभ जानी ॥

‘माता-पिता और गुरु की आज्ञा को हितकारी समझ कर उनकी पालना करनी चाहिए । ये सदैव हितकारी वचन बोलते हैं, आपकी भलाई के लिए बोलते हैं, इसलिए उनको देवता-तुल्य माना गया है ।’

माता-पिता को कभी दुःखी न करें । माता-पिता बच्चों के लिए बहुत कष्ट सहते हैं । बच्चों का बचपन अच्छा व्यतीत हो, उन्हें अच्छी शिक्षा प्राप्त हो, इसके लिए वे सदैव प्रयासरत रहते हैं । परंतु कुछ बच्चे माता-पिता को पलटकर जवाब देते हैं जिससे माता-पिता का मन दुःखी होता है । बच्चों द्वारा पलटकर जवाब देकर माता-पिता को दुःखी करना, ईश्वर को दुःखी करने के समान है । बच्चे इससे बचने के लिए माता-पिता से प्रेमपूर्वक व्यवहार करें तथा उनके प्रति कृतज्ञ रहें ।

यदि माता-पिता द्वारा बच्चों के लालन-पालन के

दौरान निभाये गये कर्तव्यों का आर्थिक मूल्यांकन करें व इन पर ब्याज आदि जोड़ें, तो निश्चित है कि कोई भी संतान माता-पिता द्वारा उन पर किए गये व्यय को लौटा नहीं सकती ।

कारण कि बचपन में जब उन्होंने निःस्वार्थ भाव से हमारी सेवा की, हमारा पालन-पोषण किया, निर्माण किया और हमें संसार में सम्मान के साथ जीने के लिए हर प्रकार की सुविधा दी तो अब वृद्धावस्था में उनकी सेवा करना, उनके लिए सभी आवश्यक सुख-सुविधायें उपलब्ध कराना संतान का नैतिक कर्तव्य बन जाता है जिनके वे स्वाभाविक रूप से अधिकारी होते ही हैं ।

वास्तविकता ये है कि यदि संतान अपनी शरीर की चमड़ी के जूते बनवाकर भी माता-पिता को पहनाये तो भी उनके क्रण से उक्खण नहीं हो सकते ।

निम्न से कोई भी प्रेरणादायक कहानी सुनायें -

## कहानियाँ

## १. माता पिता की सेवा ही क्षिद्धि प्राप्ति !

महर्षि पिप्पल बड़े ज्ञानी और तपस्वी थे । उनकी कीर्ति दूर-दूर तक फैली हुई थी । एक दिन एक सारस और सारसी जल में खड़े आपस में बातें कर रहे थे कि ‘पिप्पल ऋषि को जितना बड़प्पन मिला हुआ है उससे भी अधिक महिमा सुकर्मा की है, पर उसे लोग जानते नहीं ।’

पिप्पल ऋषि ने सारस-सारसी के इस वार्तालाप को सुन लिया । वे सुकर्मा की तलाश करते हुए उसके घर पहुँचे ।

सुकर्मा साधारण गृहस्थ था पर उसने बिना पूछे ही पिप्पल ऋषि का मनोरथ कह सुनाया ।

तब उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह एक साधारण गृहस्थ जो योग तथा अध्यात्म के तत्वज्ञान से अपरिचित है, किस प्रकार इतनी आत्मोन्नति कर सका ?

सुकर्मा के समक्ष उन्होंने जब अपनी शंका प्रगट की तो उसने बताया कि ‘माता-पिता को साक्षात् भगवान का अवतार मानकर सच्चे मन से मैं उनकी सेवा करता हूँ । यही मेरी साधना है और उसी के बल पर मैं जो कुछ बन सका हूँ सो आपकी जानकारी में है ही ।’

तो कैसी है माता-पिता की सेवा की महिमा !

## २. माता-पिता का महत्व !

एक बार की बात है एक जंगल में आम का एक बड़ा पेड़ था । एक बच्चा रोज उस पेड़ के पास खेलने आया करता था वह कभी पेड़ की डाली से लटकता, कभी फल तोड़ता, कभी उछल-कूद करता था । आम का पेड़ भी उस बच्चे से काफी खुश रहता था ।

कुछ वर्ष इसी तरह बीत गये । अचानक एक दिन वह बच्चा कहीं चला गया । पेड़ ने उसका काफी इंतजार किया पर वह नहीं आया । तो पेड़ उदास हो गया ।

कुछ साल बाद वह बच्चा फिर से पेड़ के पास आया पर वह अब कुछ बड़ा हो गया था । पेड़ उसे देखकर काफी खुश हुआ और उसे अपने साथ खेलने के लिए कहा पर बच्चा उदास होते हुए बोला कि 'अब मैं बड़ा हो गया हूँ अब मैं तुम्हारे साथ नहीं खेल सकता, मुझे कुछ किताबों की



जरूरत है जिन्हें खरीदने के लिए मेरे पास पैसे नहीं हैं।'

पेड़ ने कहा : 'उदास ना हो तुम मेरे फल तोड़ लो और उन्हें बेचकर किताबें खरीद लो। वह बच्चा खुशी-खुशी फल तोड़कर ले गया और उन्हें बेचकर किताबें खरीद ली। लेकिन वह फिर बहुत वर्षों तक वापस नहीं आया, फिर पेड़ बहुत दुःखी हुआ।

अचानक कुछ वर्षों बाद वह बच्चा जो अब जवान हो गया था वापस आया, उसे देखकर पेड़ बहुत खुश हुआ और उसे अपने साथ खेलने के लिए कहा। पर लड़के ने कहा कि 'मैं तुम्हारे साथ नहीं खेल सकता। मैं बहुत परेशान हूँ, मुझे कुछ पैसे चाहिए क्योंकि मुझे अपने बच्चों के लिए घर बनाना है।'

पेड़ ने कहा कि 'मेरी शाखाएँ बहुत मजबूत हैं। तुम इन्हें काटकर ले जाओ और अपना घर बना लेना।' अब लड़के ने खुशी-खुशी सारी शाखाएँ काट डाली और लेकर चला गया।

बहुत वर्षों बाद जब वह वापस आया ता वह बूढ़ा हो चुका था। पेड़ बोला कि 'अब तो मेरे साथ खेलो।'

पर वह बोला 'अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ, मैं अब नहीं खेल सकता।'

पेड़ उदास होते हुए बोला कि ‘अब मेरे पास ना फल हैं  
और ना ही लकड़ी । अब मैं तुम्हारी मदद भी नहीं कर  
सकता ।

बूढ़े ने कहा : “मुझे कोई सहायता नहीं चाहिए बस  
एक जगह चाहिए जहाँ मैं बाकी की जिंदगी आराम से  
गुजार सकूँ । पेड़ ने उसे अपनी जड़ में पनाह दी और बूढ़ा  
हमेशा के लिए वहीं पास में झोपड़ी बनाकर रहने लगा ।

इसी पेड़ की तरह हमारे माता-पिता भी होते हैं, जब हम  
छोटे होते हैं तो उनके साथ खेलकर बड़े होते हैं और बड़े  
होकर उन्हें छोड़कर चले जाते हैं और तब वापस आते हैं जब  
हमें उनसे कुछ चाहिए होता है । जीवन यूँ ही बीत जाता है ।

अतः हमें अपने माता-पिता की निःस्वार्थ आजीवन सेवा  
करनी चाहिए ।

### 3. लकड़ी का कटोरा

एक वृद्ध व्यक्ति अपने बहु-बेटे के यहाँ शहर में रहने  
गया । उम्र के इस पड़ाव पर वह अत्यंत कमजोर हो चुका था,  
उसके हाथ काँपते थे और दिखाई भी कम देता था । वो एक

छोटे से घर में रहते थे, पूरा परिवार और उसका चार वर्षीय पोता एक साथ डिनर टेबल पर खाना खाते थे । लेकिन वृद्ध होने के कारण उस व्यक्ति को खाने में बड़ी दिक्कत होती थी । कभी मटर के दाने उसकी चम्मच से निकलकर फर्श पे बिखर जाते तो कभी हाथ से दूध छलककर मेजपोश पर गिर जाता । बहु-बेटे एक-दो दिन ये सब सहन करते रहे पर अब उन्हें अपने पिता के इस काम से चिढ़ होने लगी ।

लड़के ने कहा : “हमें इनका कुछ करना पड़ेगा ।”

बहु ने भी हाँ में हाँ मिलाई और बोली : “आखिर कब तक हम इनकी वजह से अपने खाने का मजा किरकिरा करते रहेंगे, और हम इस तरह चीजों का नुकसान होते हुए भी नहीं देख सकते ।”

अगले दिन जब खाने का वक्त हुआ तो बेटे ने एक पुरानी मेज को कमरे के कोने में लगा दिया, अब बूढ़े पिता को वहीं अकेले बैठकर अपना भोजन करना था । यहाँ तक कि उनके खाने के बर्तनों की जगह एक लकड़ी का कटोरा दे दिया गया था, ताकि अब और बर्तन ना टूट-फूट सकें ।

बाकी लोग पहले की तरह ही आराम से बैठकर खाते और जब कभी-कभार उस बुजुर्ग की तरफ देखते तो उनकी आँखों में आँसू दिखाई देते। यह देखकर भी बहु-बेटे का मन नहीं पिघलता, वो उनकी छोटी-से-छोटी गलती पर ढेरों बातें सुना देते। वहाँ बैठा बालक भी यह सब बड़े ध्यान से देखता रहता, और अपने में मस्त रहता।

एक रात खाने से पहले उस छोटे बालक को उसके माता-पिता ने जमीन पर बैठकर कुछ करते हुए देखा।

पिता ने पूछा : “तु क्या बना रहे हो ?”

बच्चे ने मासूमियत के साथ उत्तर दिया : “मैं तो आप लोगों के लिए एक लकड़ी का कटोरा बना रहा हूँ, ताकि जब मैं बड़ा हो जाऊँगा तो आप लोग इसमें खा सकेंगे।”

और वह पुनः अपने काम में लग गया। पर इस बात का उसके माता-पिता पर बहुत गहरा असर हुआ, उनके मुँह से एक भी शब्द नहीं निकला और आँखों से आँसू बहने लगे। वो दोनों बिना बोले ही समझ चुके थे कि अब उन्हें क्या करना है। उस रात वो अपने बूढ़े पिता को वापस डिनर टेबल पर ले आये और फिर कभी उनके साथ अभद्र व्यवहार नहीं किया।

हम अक्सर अपने बच्चों को नैतिक शिक्षा देने की बात करते हैं पर हम ये भूल जाते हैं कि असल शिक्षा शब्दों में नहीं बल्कि हमारे कर्म में छुपी होती है। अगर हम बच्चों को बस ये उपदेश देते रहे कि बड़ों का आदर करो। माता-पिता का सम्मान करो और खुद अपने माता-पिता का अनादर करते रहें तो बच्चे क्या सीखेंगे। आजकल के बच्चे बताने से ज्यादा देखने से सीखते हैं। जैसा व्यवहार हम करते हैं, वैसा बच्चे सीखते हैं। इसलिए कभी भी हम मात-पिता और बड़ों के साथ ऐसा व्यवहार न करें कि कल को हमारी संतानें भी हमारे लिए लकड़ी का कटोरा तैयार करने लगें !

## ४. आधा क्रमबल !!

एक जर्मीदार था वह अपने माता-पिता की परवाह नहीं करता था। उसका एक बेटा था। वह उससे बहुत प्यार करता था। पोते को दादा-दादी भी बहुत प्यार करते थे।

पोता भी अपने दादा-दादी की बहुत सेवा करता था। एक बार सर्दी बहुत ज्यादा हो गई। जर्मीदार के पिता ने उससे कम्बल माँगा। जर्मीदार को उनका माँगना अच्छा नहीं लगा।

उसने बहुत सोचकर अपने बेटे को कहा कि कबाड़ के कमरे में एक पुराना कम्बल पड़ा है वो इनको लाकर दे दो । जर्मीदार

का बेटा गया और कम्बल लाकर उसने अपने दादा को दे दिया । दादा ने देखा कि वह तो आधा है ।

जर्मीदार के पिता ने अपने बेटे को कहा : “यह तो आधा कम्बल है, इससे ठंड कैसे रुकेगी ?”

जर्मीदार ने अपने बेटे से कहा : “बेटा ! तुने कम्बल आधा क्यों दिया, आधा कम्बल कहाँ गया ?”

बेटे ने जर्मीदार से कहा : “जब आप बूढ़े हो जायेंगे और आप मुझसे कम्बल माँगेंगे तब मैं कहाँ कम्बल ढूँढ़ता रहूँगा इसलिए मैंने अभी से ही आपके लिए बंदोबस्त कर लिया है । यह सुनकर जर्मीदार अपनी करनी पर बहुत शर्मिंदा हुआ ।

कहने का अर्थ यह है कि जैसे आप अपने माँ और बाप के साथ व्यवहार करोगे, आपके बच्चे भी वैसा ही व्यवहार आपके साथ आगे आनेवाले समय में करेंगे ।

इसलिए अभी से इस सब बात को अपने अंदर बैठाकर रख लो कि जैसी करनी वैसी भरनी ।

## गतिविधि

माता-पिता का हृदय अत्यंत कोमल होता है वे हमसे सिवाय प्रेमपूर्ण व्यवहार के और कुछ नहीं चाहते । वे तो हमारी छोटी-छोटी सेवाओं से ही तृप्त और संतुष्ट हो जाते हैं और हम पर अपने आशीर्वादों की बौछार कर देते हैं ।

आइये जानते हैं कुछ ऐसी सहज-सरल छोटी छोटी सेवाओं के बारे में जिनसे हम अपने माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त कर सकते हैं ।

\* माता-पिता बाहर से आयें तो उन्हें तत्काल पानी लाकर दें । आप में से कितने बच्चे माता-पिता को बाहर से घर लौटने पर बिना माँगे पानी लाकर देते हैं ? (जो बच्चे ऐसा करते हैं उनको साधुवाद दें ।) लेकिन कुछ बच्चे ऐसे भी होते हैं जो माता-पिता द्वारा पानी माँगने पर भी 'क्या है ? आप स्वयं ले लीजिये' ऐसा पलटकर जवाब दे देते हैं ? बच्चों, ऐसा बोलना सर्वथा अनुचित है । माता-पिता बाहर से थककर आते हैं । ऐसे में आप उन्हें पानी दें, तो उन्हें अच्छा लगता है ।

\* माता-पिता की उनके गृहकार्यों में सहायता करें ।

जैसे - चक्की से गेहूँ पिसवाकर लाना, बाजार से सब्जी इत्यादि लाकर देना, माँ भोजन बना रही हो तो सबको भोजन परोसना, चीजों को यथास्थान रखना, घर की साफ-सफाई में मदद करना आदि ।

\* यदि माता-पिता बीमार हैं तो उनका भरपूर ख्याल रखें, उन्हें डॉक्टर के पास ले जाये, समय पर दवाइयाँ दें, उस दौरान उनके अनुकूल भोजन आदि का विशेष ध्यान रखें ।

\* जन्मदिन, त्यौहार जैसे अवसरों पर उन्हें कुछ-न-कुछ भेंट दें ।

\* अपने कामों से थोड़ा समय निकालकर कभी-कभी उनके पास बैठकर उनसे बातें करें ।

\* यदि माता-पिता हमें किसी कार्य के लिए मना करें तो बिना कोई तर्क किये उनकी बात का मान रखें ।

## प्रेरणादायी भाववर्धक बिंदु

\* माँ घर का गौरव तो पिता से घर का अस्तित्व होता है । माँ के पास भावों की अश्रुधारा तो पिता के पास विवेक होता

है। दोनों समय का भोजन माँ बनाती है तो जीवन भर भोजन की व्यवस्था करनेवाले पिता ही होते हैं।

कभी ठोकर या चोट लगने पर ‘ओ माँ’ ही मुँह से निकलता है लेकिन रास्ता पार करते समय कोई ट्रक पास आकर ब्रेक लगाये तो ‘बाप रे’ यही मुँह से निकलना है, क्योंकि छोटे-छोटे संकटों के लिए माँ है पर बड़े संकट आने पर पिता ही याद आते हैं। पिता एक वटवृक्ष है जिसकी शीतल छाँव में सम्पूर्ण परिवार सुख से रहता है।

\* जब माँ छोड़कर जाती है, तब दुनियाँ में कोई दुआ देनेवाला नहीं होता... और जब पिता छोड़कर जाता है, तब कोई हौसला देनेवाला नहीं होता।

\* मेरे पास जो शौहरत हैं वो मेरी माता-पिता की ही बदौलत हैं।

\* जिस के होने से मैं खुद को मुक्कम्मल मानता हूँ,  
मेरे रब के बाद मैं बस अपने माँ-बाप को जानता हूँ।

\* घेर लेने को मुझे जब भी बलाएँ आ गई,  
ढाल बनकर सामने माँ-बाप की दुआएँ आ गई।

\* जिस घर में माँ-बाप की कदर नहीं होती,

उस घर में कभी बरकत नहीं होती ।

\* माँ-बाप के लिए क्या शेर लिखूँ ?  
माँ-बाप ने मुझे खुद शेर बनाया है ।

\* माँ की ममता और पिता की क्षमता का अंदाजा  
लगाना भी सम्भव नहीं है ।

\* जिन मूर्तियों को इंसान बनाते हैं, हम उनकी तो  
पूजा करते हैं, पर जिन्होंने हमें बनाया है हम उन माता-  
पिता की इज्जत तक नहीं करते ।

\* माँ-बाप जिंदगी के पेड़ की जड़ है, पेड़ कितना भी  
बड़ा क्यों न हो जाय, हरभरा क्यों न हो जाय, जड़ काटने से  
वह हरभरा नहीं रह सकता ।

\* मंजिल दूर और सफर बहुत है, छोटी-सी जिंदगी की  
फिकर बहुत है ॥

मार डालती ये दुनिया कब की हमें, लेकिन ‘माँ’ की  
दुआओं में असर बहुत है ॥

\* दम तोड़ देती है माँ-बाप की ममता... जब बच्चे कहते  
हैं कि ‘तूने हमारे लिए किया ही क्या है ।’

\* कुछ ना पा सके तो क्या गम है,

माँ-बाप को पाया है ये क्या कम है ?

जो थोड़ी-सी जगह मिली इनके कदमों में,

वो क्या किसी जन्नत से कम है ?

\* खलाना हर किसी को आता है, हँसाना भी हर किसी को आता है, खला के जो मना ले वो बाप है और जो खला के खुद भी रो पड़े वह माँ है ।

\* “माँ” एक ऐसी बैंक है जहाँ आप हर भावना और दुःख जमा कर सकते हैं और “पिता” एक ऐसा क्रेडिट कार्ड है जिनके पास बैलेंस न होते हुए भी वे हमारे हर सपने को पूरे करने की कोशिश करते हैं !

\* पिता हमारे लिये क्रेडिट कार्ड का काम करते हैं, हमारी सब जरूरतों को इनकैश कर देते हैं । तो क्या जब वो वृद्ध हो जायें तो, हम उनके लिये आधार कार्ड का काम नहीं कर सकते क्या ?

\* ऐसे देवतुल्य महिमावंत माता-पिता का जितना आदर सत्कार किया जाय उतना कम है । इनके उपकारों का बदला तो हम चुका नहीं सकते लेकिन इनका पूजन-अर्चन करके इनके चरणों में अपनी कृतज्ञता के भाव तो अर्पित कर ही

सकते हैं, चलिये आज हम सब मिलकर माता-पिता का पूजन करते हैं -

## मातृ-पितृ पूजन विधि :

१. माता-पिता को स्वच्छ तथा ऊँचे आसन पर बिठायें। बच्चे अपने माता-पिता को कुमकुम का तिलक करें।



अक्षत रखें।



३. माता-पिता को फूलमाला पहनायें।  
४. माता-पिता की सात परिक्रमा करें।  
इससे सम्पूर्ण पृथ्वी की परिक्रमा का फल प्राप्त होता है।

५. माता-पिता को झुककर विधिवत् प्रणाम करें।

६. थाली में दीपक जलाकर माता-पिता की आरती करें। अपने माता-पिता एवं गुरु में ईश्वरीय भाव जगाते हुए उनकी सेवा करने का दृढ़ संकल्प करें।



७. अब माता-पिता अपने बच्चों

को तिलक करें और अपने गले की फूलमाला उनको पहनायें ।

८. पूज्य बापूजी का परम कल्याणकारी संदेश है कि



“अब बच्चे थोड़ी देर मौन बैठें । माता-पिता अपने बच्चों को स्नेहपूर्वक देखें और मन-ही-मन उनके प्रति आत्मकृपा बरसायें । इस समय बच्चे आदर से, सद्भाव से माता-पिता को निहारें... और ऐसा चिंतन करें कि उनका अंतर्यामी परमात्मा उन पर आशीर्वाद बरसा रहा है, अपना शुभ आशीष बरसा रहा है ।”

९. बच्चों के सिर पर हाथ घुमायें... उन्हें शुभ आशीष दें । माता-पिता बच्चों को आशीर्वाद दें कि इनका मंगल हो ।

१०. माता-पिता अपनी संतान को प्रेम से सहलायें । संतान अपने माता-पिता के गले लगे ।

११. अब हर शुभ घड़ी की तरह, बेटे-बेटियाँ माता-पिता का मुँह मीठा करें और माता-पिता भी अपने बच्चों को मधुर-प्रसाद खिलायें ।

(निम्न पंक्तियों का सभी से पीछे-पीछे उच्चारण करवायें ।)

## संकल्प

आज से ही ठान लिया है हमने, शुभ कार्य से न शर्मायेंगे ।

मात-पिता की सेवा को, अपने जीवन में लायेंगे ॥

माता-पिता और गुरुजनों की पूजा और सेवा करके, अपना भाग्य  
बनायेंगे ॥

करते हैं हम अभी संकल्प, भारतीय संस्कृति को सदैव अपनायेंगे ।

१४ फरवरी को वेलेंटाइन डे नहीं, 'मातृ-पितृ पूजन' दिवस मनायेंगे ॥

१२. सभी अपने सिर पर हाथ रखेंगे और यह पवित्र  
संकल्प दोहरायें ।

मैं अपने माता-पिता व गुरुजनों का आदर करूँगा/  
करूँगी । मेरे जीवन को महानता के रास्ते ले जानेवाली उनकी  
आज्ञाओं की पालन करना मेरा कर्तव्य है और मैं उसे अवश्य  
पूरा करूँगा/करूँगी ।

(सूचना : आपकी सुविधा के लिए यहाँ मातृ-पितृ  
पूजन विधि के ट्रैक लिंक दी जा रही है ।)

<https://balsanskarkendra.org/downloads>

सभी को पूज्य बापूर्जी के ब्रह्म संकल्प से अवगत करायें ।

# पूज्य बापूजी द्वारा किया गया ब्रह्मसंकल्प

“मातृ-पितृ पूजन दिवस में पंच महाभूत, देवी-देवता, मेरे साधक और मुसलमान, हिन्दू, ईसाई, पारसी सभी जुड़ जायें - ऐसा संकल्प मैं आकाश में फैला रहा हूँ। देवता सुन लें, यक्ष सुन लें, गंधर्व सुन लें, पितर सुन लें कि भारत और विश्व में मातृ-पितृ पूजन दिवस’ का कार्यक्रम मैं व्यापक करना चाहता हूँ और सभी लोग अपने माता-पिता का सत्कार करें, ऐसा मैं एक अभियान चलाना चाहता हूँ। आप सभी इसमें प्रसन्न होंगे और सहभागी होंगे ।”



आरती : सभी मिलकर गुरुदेव की आरती करें ।

प्रार्थना : ॐ सहनाववतु सहनौभुनक्तु सहवीर्यं करवावहे ।  
तेजस्विना वधीतमस्तु मा विद्विषावहे ॥

ॐ तं नमामि हरिं परम ।

ॐ तं नमामि हरिं परम ।

ॐ तं नमामि हरिं परम ।

सुसंस्कारों की महक से, जग को महका दिया।  
कुसंस्कारों की कालिमा को, ज्ञान की ज्योत से भगा दिय॥  
मातृ-पितृ पूजन से गुरुवर ने, सच्चे प्रेम को जगा दिया।  
बच्चों और माता-पिता को, दिल से आपस में मिला दिय॥

आओ मनायें १४ फरवरी 'मातृ-पितृ पूजन दिवस'।

मातृ-पितृ पूजन दिवस के कार्यक्रम के आयोजन हेतु  
किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त करने के लिए एवं संबंधित  
सामग्री प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें।

बाल संस्कार विभाग, संत श्री आशारामजी आश्रम,  
मोटेरा, साबरमती, अहमदाबाद - ૫

दूरभाष : 079-61210749/50/51

whatsapp - 7600325666,

email - bskamd@gmail.com,

website : [www.balsanskarkendra.org](http://www.balsanskarkendra.org)